भाग 3:
अन्तिम स्थिति

भाग 1 में हमने अपनी वर्तमान बनावट मृत्यु के समय क्या होता है और मृत्यु तथा पुनरुत्थान के बीच की स्थिति का अध्ययन किया था। भाग 2 में हमने यीशु की वापसी के समय होने वाली घटनाओं का अध्ययन किया था। इस अन्तिम भाग में न्याय के दिन के बाद हमें मिलने वाले पुरस्कार या दण्ड की अवधि तथा प्रकृति पर विचार किया जाएगा। ''अनन्त काल'' का क्या अर्थ है? धर्मी लोगों को कितनी देर तक आशीष मिलेगी और अधर्मियों को कब तक दण्ड दिया जाएगा? हमारे लिए परमेश्वर के मन को जानने का एकमात्र ढंग उसमें से खोजना है, जो उसने प्रकट किया है। ''मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उस में है? वैसे ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा। परन्तु हम ने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें, ... जो परमेश्वर ने हमें दी हैं। जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला-मिलाकर सुनाते हैं'' (1 कुरिन्थियों 2:9-13)। बिना प्रकाशन के हम मनुष्य की अन्तिम स्थिति के बारे में पूरी तरह से अंधकार में हैं।

इस भाग में हम भौतिक संसार के अलोप हो जाने के बाद आत्मिक संसार के अस्तित्व में आने का अध्ययन करेंगे। हम, जिन्होंने आत्मिक संसार की छोटी सी झलक भी कभी नहीं पाई कैसे उसे पूरी तरह समझ सकते हैं? परमेश्वर ने आत्मिक संसार की प्रकृति हमें बताने के लिए भौतिक शब्दों तथा प्रतीकों का इस्तेमाल किया है। हमें इस बात में सावधान रहना चाहिए कि ऐसी शब्दावली को गलत न समझें।